उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं कोई मुंह से अंदाज पर नहीं बोल रहा हूं, आप आंकड़ों के दृष्टिकोण से भी देखेंगे, तो इस देश में गरीबी बढ़ रही है। अभी इसी 24 जुलाई को ज्ञान प्रकाश पिलानिया जी के सवाल के जवाब में खुद सरकार ने माना है और बताया है कि राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण-3 2007-08 के अनुसार इस देश में 69.5 प्रतिशत बच्चे, जिनमें 71.5 प्रतिशत ग्रामीण बच्चे और 73 प्रतिशत शहरी बच्चे और 15-49 वर्ष की आयु की 55.3 प्रतिशत महिलाएं रक्त-अल्पता की शिकार हैं, anemic हैं। यह अभी 24 जुलाई को बताया गया है। उपसभाध्यक्ष महोदय, यह हमारे देश की हालत है। हमारे देश की अधिकांश महिलाएं, अधिकांश बच्चे anemic हैं, उनमें खून की कमी है, उनका वजन घट रहा है। हम गर्भवती महिलाओं को अच्छी खुराक नहीं दे पाते हैं। यह मेडिकल साइंस के जरिए साबित है कि जब गर्भ में बच्चे का formation होता है, आगे चल कर वह किस तरह का आदमी बनेगा, किस तरह का बच्चा बनेगा, यह उसी समय decide हो जाता है। हमारे देश के अधिकांश बच्चे कुपोषण के शिकार हैं। उनकी height नहीं बढ़ रही है, उनका mental development नहीं हो रहा है और हम कह रहे हैं कि हम दुनिया में एक आर्थिक शक्ति बनने जा रहे हैं।

उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं आपको बताना चाहूंगा कि हमारे देश में हालत क्या है? 1956-57 में प्रति व्यक्ति दाल की खपत 72 ग्राम थी। आप जानते हैं कि दाल ही गरीब आदमी के प्रोटीन हासिल करने का जरिया होता है। गरीबों के बीच यह कहावत थी कि हम दाल-रोटी खाने वाले जीव हैं। उस दाल की आज क्या हालत है! 1956-57 में देश के आजाद होने के बाद नई-नई बात थी, उस समय हम 72 ग्राम दाल खाते थे, 1990-91 में दाल की खपत प्रति व्यक्ति 42 ग्राम हो गई और 2005-06 में 33 ग्राम। आज हमें नहीं मालूम है कि यह 33 ग्राम दाल भी कई थालियों से, जिस ढंग से दाल का हम अखबारों में पढ़ते हैं, अधिकांश थालियों से दाल गायब हो चुकी है। आजादी के इतने वर्षों के बाद हम जो आर्थिक नीति चला रहे हैं, यह उसकी उपलब्धि है! यही नहीं, जो अनाज है, गेहूं है, चावल है, उनकी भी प्रति व्यक्ति खपत इस देश में घटी है।

महोदय, हमारे देश के किसानों की क्या हालत है? स्वामीनाथन जी कहते हैं कि जब हम खेती की बात करते हैं, तो इसका मतलब है कि हम 70 करोड़ लोगों की बात करते हैं। उन 70 करोड़ लोगों की क्या हालत है? नमो नारायण मीणा जी ने एक सवाल के जवाब में बताया था कि उनके अनुसार पिछले 30 वर्षों में ग्रामीण परिवार पर कर्ज का बोझ 25 गुना बढ़ गया है। 1971 में प्रति ग्रामीण परिवार औसत कर्ज 487 रुपए था, जो 2003 में 12,585 करोड़ रुपए हो गया। उपसभाध्यक्ष महोदय, यही हमारे देश की आर्थिक नीति की उपलब्धि है। मैं यह कह रहा था कि जिन आर्थिक नीतियों को हम चला रहे हैं, उनसे हम क्या हासिल कर रहे हैं, यह बात मेरी समझ में नहीं आती है। इस सरकार को बहुमत मिला है, हमको इसमें एक बात अच्छी लगी। जब सरकार ने शपथ ग्रहण की थी, उससे पहले अखबारों में खबर छपती थी कि फाइनांस मिनिस्टर कोई टेक्नोक्रैट होगा। हमें इस बात की खुशी है कि प्रणब दा फाइनांस मिनिस्टर बने हैं, कोई टेक्नोक्रेट नहीं बना है। क्योंकि जो आर्थिक सर्वेक्षण सदन में प्रस्तुत किया गया था, उस आर्थिक सर्वेक्षण को पढ़ने के बाद यह डर लग रहा है कि हमारी जो सार्वजनिक कंपनियां हैं, उनका भी विनिवेश हो जाएगा, और तो और बैंक भी प्राइवेट सैक्टर में चले जाएंगे। हमें इस बात का डर लग रहा था, लेकिन मैं हमेशा यह पसंद करता हूं कि कोई टैक्नोक्रेट आदमी फाइनांस मिनिस्टर बने, उससे बेहतर है कि पब्लिक लाइफ का कोई आदमी इस मंत्रालय का काम संभाले।

एक माननीय सदस्य : आपकी बात एन.के. सिंह जी को अच्छी नहीं लग रही होगी।

श्री शिवानन्द तिवारी : प्रणब मुखर्जी जी ने ...(**समय की घंटी**)...

उपसभाध्यक्ष (प्रो. पी.जे. कुरियन) : टाइम खत्म हो गया।

श्री शिवानन्द तिवारी : बस, मैं खत्म कर रहा हूं। प्रणब मुखर्जी जी ने जो एक आश्वासन दिया है, उससे हमको जरूर खुशी होती है। उन्होंने कहा है कि बैंकों का विनिवेश नहीं होगा। बैंक हमारे हाथ में मज़बूत साधन हैं और उन्हीं के जरिए जिस तबके को भी हम कुछ देना चाहते हैं, उसको हम दे सकते हैं। लेकिन इसमें संतोष करने लायक बात कुछ नहीं है। मैं यह कहूंगा कि जिस तरह से भ्रष्टाचार इस देश में बढ़ रहा है, जिस तरह से समाज में मनुष्य के जीवन की गुणवत्ता खत्म हो रही है, आज आपने आदमी को बिल्कुल एक कंज्यूमर बना करके रख दिया है। उसके जीवन का एक ही लक्ष्य रह गया है कि कैसे हम धन हासिल करें और उस धन के जरिए जो बाजार में उत्पाद बिक रहे हैं, जिनता विज्ञापन टेलीविज़न और सिनेमा के ज़रिए हो रहा है, उसको हम कैसे हासिल करें। आज मनुष्य के जीवन का एक मात्र लक्ष्य यही रह गया है, बाकी सारी चीजें खत्म हो गई हैं। कांग्रेस पार्टी गांधी जी का बहुत नाम लेती है, गांधी जी ने कहा था कि जिस आर्थिक नीति को आप चला रहे हैं, वह आर्थिक नीति अनैतिक है ...(**समय की घंटी**)... वह भ्रष्टाचार को जन्म दे रही है, गैर बराबरी को बढ़ा रही है, भुखमरी को बढ़ा रही है ...(**व्यवधान**)...

उपसभाध्यक्ष (प्रो. पी.जे. कुरियन) : तिवारी जी, तिवारी जी, प्लीज़, हो गया।

श्री शिवानन्द तिवारी : अंग्रेजों के जमाने में अकाल पड़ता था, लेकिन अंग्रेजों के जमने में हमने कभी यह नहीं सुना कि तब किसान आत्महत्या करता था। आजादी के बाद देश इतना आगे बढ़ा है कि आज इस देश में लाखों किसान आत्महत्या कर रहे हैं ...(**व्यवधान**)...

उपसभाध्यक्ष (प्रो. पी.जे. कुरियन) : समाप्त करो, तिवारी जी।

श्री शिवानन्द तिवारी : और आप कह रहे हैं कि आप देश को विकास के रास्ते पर ले जा रहे हैं। नहीं, देश को आप विकास के रास्ते पर नहीं, विनाश के रास्ते पर ले जा रहे हैं ...(**व्यवधान**)...

उपसभाध्यक्ष (प्रो. पी.जे. कुरियन) : तिवारी जी, आपका समय समाप्त हो गया।

श्री शिवानन्द तिवारी : इस बतट से भी मैं किसी तरह की उम्मीद नहीं करता हूं कि देश के गरीब आदमी की बेहतरी होगी अथवा बेरोज़गारों को लाभ मिलेगा। इसकी कहीं से कोई उम्मीद नहीं है ...(**व्यवधान**)...

उपसभाध्यक्ष (प्रो. पी.जे. कुरियन) : तिवारी जी, बस आपका समय हो गया।

श्री शिवानन्द तिवारी : वित्त मंत्री जी को इस पर फिर से सोचना चाहिए और गरीबों के उत्थान के लिए हाउस में वह नए ढंग से बजट लेकर आएं। ...(**व्यवधान**)...

उपसभाध्यक्ष (प्रो. पी.जे. कुरियन) : तिवारी जी, हो गया।

श्री शिवानन्द तिवारी : इसी अनुरोध के साथ, आपको धन्यवाद देते हुए मैं अपनी बात खत्म करता हूं।

SHRI SYED AZEEZ PASHA (Andhra Pradesh): Mr. Vice-Chairman, Sir, Shri Pranab Mukherjee, while presenting the Budget, talked about inclusive growth. He explained in detail how the spending on social sector has increased and he took a lot of pains in explaining that the focal point of the